



# THE ChangeMakers



July to September 2023 Issue 17

Transforming Rural Bihar

\*जमा निकासी \*आई एमपीएस \*आधार /ATM से लेन-देन

वितीय  
समावेशन  
विशेषांक



सूक्ष्म वित्त पोषण

Page 01



Jeevika Didi as Bank sakti

Page 07



जीविका दीदियों को बीमा ने दिया सहारा

Page 11



बड़की दीदी

Page 21

## From the editor's desk

Greetings and gratitude

We present before you yet another edition of “The Changemakers”. This is a special edition on Financial Inclusion. A strategy for universal access to financial services has to address two key challenges - ubiquity and comprehensiveness of range of financial services. The Lead story explains how the financial services are being easily accessible to the individuals in terms of geographical proximity and the ease with which the services are being procured. The subsequent articles refer to the role JEEViKA is playing in the financial inclusion spectrum in Bihar.

Our “Badki Diidi” reiterates the importance of safe sanitation. The Events section captures the commendable interventions of Jeevika.

We appreciate your support and solicit your suggestions .

Happy Reading.

Regards  
**Mahua Roy Choudhury**  
mahua@brlp.in

### EDITORIAL TEAM

- **Mr. Mukesh Chandra Sharan**  
Program Coordinator (FI)
- **Mrs. Mahua Roy Chaudhury**  
Program Coordinator (G&KM)
- **Mr. Pawan Kr. Priyadarshi**  
Project Manager (Communication)

### CONTENT COMPILATION TEAM

- **Mr. Biplab Sarkar**  
Manager Communication
- **Mr. Rajeev Ranjan**  
Manager Communication, Begusarai
- **Mr. Rajeev Ranjan**  
Manager Communication, Siwan
- **Mr. Arpan Mukherjee**  
Young Professional-KMC

## संदेश



श्री राहुल कुमार (भा.प्र.से.)

मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जीविका (BRLPS)

राज्य मिशन निदेशक, लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान

किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास में उसकी आर्थिक प्रगति का महत्वपूर्ण स्थान है। बिहार में आर्थिक प्रगति को गति देने के लिए ग्रामीण समुदाय को वित्तीय संस्थानों से जुड़ाव एवं उनमें वित्त संबंधी आदतों में सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य किया जा रहा है। जीविका परियोजना अपने प्रारंभिक काल से ही सामुदायिक संस्थाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के उद्देश्य से कार्य कर रही है। बैंकों से जुड़ाव के कारण जीविका दीदियाँ बैंकों से ऋण प्राप्त कर अपने जीविकोपार्जन के साधनों में वृद्धि कर आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। जीविका के प्रयास से आज ग्रामीण समुदायों का वित्तीय सेवाओं तक पहुंच सहज हो गयी है।

अबतक कुल 930724 स्वयं सहायता समूहों का जुड़ाव बैंकों से हुआ है। सितम्बर 2023 तक राज्य में विभिन्न बैंकों के द्वारा कुल 29837.07 करोड़ रुपये का ऋण जीविका के विभिन्न सामुदायिक संस्थाओं को प्रदान किया गया है। इन और समूहों द्वारा ससमय ऋण वापसी भी की जा रही है जो राष्ट्रीय स्तर पर भी उत्कृष्ट है। आज जिस गति से राज्य की महिलाएँ वित्तीय सेवाओं से जुड़कर इसका लाभ ले रही हैं, इससे आने वाले समय में राज्य के आर्थिक विकास में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

आज जीविका दीदियाँ ग्राम स्तर पर भी वित्तीय सेवा उपलब्ध कराने हेतु विभिन्न बैंकों की मदद से ग्राहक सेवा केन्द्रों का संचालन कर पूर्ण वित्तीय समावेशन में अपनी अहम भूमिका निभा रही हैं।

## CONTENTS

सूक्ष्म वित्त पोषण.....	01
सामुदायिक संगठनों में वित्तीय अनुशासन एवं वित्तीय प्रबंधन.....	04
Jeevika Didi as Bank sakh.....	07
वित्तीय समावेशन में हेल्प डेस्क की कार्यनीति एवं भूमिका.....	09
जीविका दीदियों को बीमा ने दिया सहारा.....	11





डॉ. एन सरवण कुमार (भा.प्र.से.)  
सचिव, ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

वित्तीय समावेशन का मतलब समाज के अंतिम व्यक्ति को वित्तीय सेवाओं से जुड़ाव करवाना है, जो उनके आर्थिक प्रगति में सहायक बन सके। जीविका का हमेशा से यह प्रयास रहा है कि समाज के अंतिम पायदान पर खड़ी महिलाएँ विकास की मुख्यधारा में शामिल हो पाएँ। जीविका अपने लक्षित समूहों के बीच वित्तीय समावेशन की विभिन्न गतिविधियों का निरंतर संचालन कर उनके जीवन में साकारात्मक परिवर्तन लाने में कामयाब हो पायी है। आज जीविका समूह से जुड़ी दीदियाँ विभिन्न वित्तीय सेवाओं से लाभान्वित होकर खुद एवं अपने परिजनों के जीवन को बेहतर बना रही हैं। जीविका परियोजना अपने लक्षित समूहों को बचत करने, आपस में लेन-देन करने, बैंकों के साथ जुड़ाव करवाने, आवश्यकतानुसार ऋण लेने तथा उसे ससमय वापस करने, बीमा सुविधाओं से जुड़ने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करने का कार्य कर रही है।

आज जीविका की दीदियाँ वित्तीय सेवाओं से खुद तो जुड़ ही रही हैं, साथ ही समाज के सभी वर्गों को भी इससे जुड़ने में सहायता पहुँचा रही हैं। इसका परिणाम है कि जीविका दीदियाँ अपने आर्थिक विकास के साथ-साथ राज्य के विकास में भी अपनी सार्थक भूमिका निभा रही हैं।

## CONTENTS

Community Finance and The Role of CBO level Community Professionals.....	14
Digital Financial Inclusion.....	18
दीदी की कहानी, दीदी की जुबानी.....	21
बड़की दीदी .....	25
मन की कलम से .....	27



01 सूक्ष्म वित्त पोषण



07 Jeevika Didi as Bank sakhi



11 जीविका दीदियों को बीमा ने दिया सहारा




18 Digital Financial Inclusion





# सूक्ष्म वित्त पोषण

## सामुदायिक संगठनों को सबल बनाने की पहल

 Bikas Kumar, Manager Communication, Bhagalpur

महिलाओं द्वारा गठित सामुदायिक संगठनों के माध्यम से गरीब परिवारों के जीविकोपार्जन संबंधी संसाधनों को बढ़ाने हेतु जीविका परियोजना कार्य करती है। समान स्तर की महिलाओं का स्वयं सहायता समूह गठन कर एवं उन्हें चरणबद्ध तरीके से प्रशिक्षित करके इतना सशक्त किया जाता है कि जीवन के सभी फैसले वे खुद ले सकें। इसके अलावा जीविका सूक्ष्म वित्त से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को सामुदायिक संगठनों यथा स्वयं सहायता समूहों, ग्राम संगठनों, संकुल संघों का अभिन्न अंग बनाया जा चुका है। स्वयं सहायता समूहों के बीच बचत एवं पैसों के आपसी लेनदेन को प्रोत्साहित करने के साथ ही पैसों के लेनदेन की लेखांकन पद्धति हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इस तरह से ग्रामीण महिलाओं को वित्तीय एवं बैंकिंग गतिविधियों से जोड़ने के उद्देश्य की भी पूर्ति हो रही है। जीविका के इस प्रयास का परिणाम यह है कि बड़े पैमाने पर ग्रामीण महिलाओं में वित्तीय जागरूकता बढ़ी है।

### वित्तीय समावेशन के चरणबद्ध तरीके

**स्वयं सहायता समूह का गठन एवं बचत :-** जीविका द्वारा सबसे पहले समान स्तर की 10-12 गरीब महिलाओं को मिलाकर स्वयं सहायता समूह का गठन किया जाता है। समूह गठित होते ही समूह से जुड़ी सभी महिलाएँ अपनी खर्च होने वाली राशि की कटौती कर हर सप्ताह कुछ रुपयों की बचत करती हैं। इस तरह समूह के पास हर सप्ताह सामूहिक बचत के तौर पर कुछ राशि जमा हो जाती है। बचत की राशि निश्चित एवं एक समान होती है और यह नियमित रूप से समूह में जमा होती है। इससे महिलाओं में समान स्वामित्व की भावना जागृत होती है।



**आपसी लेनदेन एवं ऋण वापसी :-** सामूहिक बचत से एकत्रित धनराशि से सदस्य महिलाएँ अपनी छोटी-छोटी जरूरतें पूरी करती हैं और इसके बदले उन्हें 1 रुपये प्रति सैकड़ा की दर से ब्याज अदा करना पड़ता है। वे किस्त दर किस्त कर्ज का नियमित भुगतान करती हैं। इससे समूह में महिलाओं के बीच आपसी लेनदेन को प्रोत्साहन मिलता है। साथ ही इससे प्राप्त ब्याज से समूह की आमदनी होती है। दूसरी तरफ, महिलाओं को अपनी जरूरत के वक्त महाजन से महंगे दर पर कर्ज नहीं लेना पड़ता है और गरीब महिलाओं को महाजन के चंगुल से भी छुटकारा मिलता है। इससे उनमें स्वच्छ बैंकिंग की आदत विकसित होती है। यही कारण है कि जीविका ने समूह के लिए पंचसूत्र में इसे प्रमुखता से शामिल किया है।

**बैंक से जुड़ाव :-** समूह की अवधि 2 माह होने पर समूह का बैंक खाता खुलवाया जाता है। हालांकि इसके पहले यह देखा जाता है कि समूह में पंचसूत्र का पालन हो रहा है या नहीं। पंचसूत्र का अच्छी तरह पालन करने वाले समूहों का ही बैंक खाता खुलवाया जाता है।

**सूक्ष्म नियोजन :-** बैंक खाता खुल जाने के बाद समूह के प्रत्येक सदस्यों का सूक्ष्म नियोजन किया जाता है। सूक्ष्म नियोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें समुदाय अपनी समस्त जरूरतों का आकलन कर सदस्य, समूह एवं संगठन के स्तर पर उपलब्ध संसाधनों के आधार पर आने वाली समस्याओं के

समाधान के लिए निर्णय लेता है। इसमें समूह के प्रत्येक सदस्यों की आर्थिक एवं जीविकोपार्जन संबंधी जरूरतों की पहचान की जाती है। जीविका परियोजना के अंतर्गत माइक्रो प्लानिंग अर्थात् सूक्ष्म नियोजन पर काफी जोर दिया जाता है ताकि सामुदायिक संगठन अपने सदस्यों की जरूरतों का आकलन करें और भविष्य के लिए योजना बनाकर निर्णय लें। इससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ने और निर्णय लेने की क्षमता विकसित होने के अलावा संसाधनों का भी समुचित उपयोग होता है।

**आरंभिक पूंजीकरण निधि (आईसीएफ) :-** समूह के सूक्ष्म नियोजन के बाद प्रखंड परियोजना क्रियान्वयन इकाई में गठित ऋण समिति की बैठक होती है, जिसे एलसीएम कहते हैं। इस बैठक में माइक्रोप्लानिंग एवं आईसीएफ के लिए प्राप्त आवेदन पर विचार किया जाता है। इसके बाद परियोजना द्वारा समूह को शुरुआत में आरंभिक पूंजीकरण निधि (आईसीएफ) के रूप में 30,000 से 1,00,000 रुपये और परिक्रमी निधि (रिवॉल्विंग फंड) के तौर पर 30,000 रुपये प्रदान की जाती है। इससे समूह को शुरुआती पूंजी मिल जाती है।

**बैंक क्रेडिट लिंकेज :-** समूह के सदस्यों की जीविकोपार्जन संबंधी जरूरतों की पूर्ति केवल बचत के पैसे से नहीं की जा सकती है। ऐसे में समूह के द्वारा बैंक से ऋण लेने की प्रक्रिया





शुरू होती है। समूह को बैंक से ऋण की पहली किस्त के रूप में 1,50,000 रुपये मिलते हैं। कर्ज की इस राशि से समूह की दीदियों को जीविकोपार्जन संबंधी विभिन्न गतिविधियां शुरू करने में मदद मिलती है। वहीं प्रत्येक माह ऋण खातों का सही संचालन होने की स्थिति में एक साल के उपरान्त बैंक समूहों को ऋण की दूसरी, तीसरी एवं चौथी किस्त प्राप्त होता है।

**जीविकोपार्जन गतिविधियां :** – स्वयं सहायता समूह की दीदियां अपनी बचत राशि, जीविका से प्राप्त आईसीएफ की राशि और बैंक से प्राप्त ऋण का उपयोग व्यवसाय करने, कृषि कार्य, पशुपालन, मुर्गीपालन एवं उद्यम स्थापित करने के लिए करती हैं, जिससे उनके घर की आमदनी बढ़े। इससे सदस्यों को गरीबी से बाहर निकलने में मदद मिलती है और वे अपनी मूलभूत जरूरतें पूरी करने में सक्षम होती हैं। आजीविका से होने वाली कमाई से वे कर्ज का नियमित भुगतान करती हैं। चूंकि समूह की सदस्य महिलाएँ शुरुआत में ही बचत करते हुए आपसी लेनदेन की प्रक्रिया शुरू करके समूह में वित्तीय अनुशासन स्थापित करने का प्रयास करती हैं। अतः वे बैंक कर्ज का भी भुगतान नियमित तौर पर करती हैं। यही कारण है कि बैंकों द्वारा जीविका के स्वयं सहायता समूहों को दिए गए ऋण में एनपीए अपेक्षाकृत कम है।

**ऋण वापसी :** – समूह की दीदियां जीविकोपार्जन गतिविधियों से जो आय अर्जित करती हैं, उससे वे अपने घर की मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के अलावा समूह या बैंक से लिए ऋण की राशि का भुगतान करती हैं। समूह की दीदियों पर कर्ज का भार ज्यादा न पड़े इसके लिए छोटी-छोटी मासिक किस्तों में



कर्ज का भुगतान का प्रावधान है। इसका फायदा यह होता है कि वे समयबद्ध तरीके से कर्ज की वापसी करने में सक्षम होती हैं। इससे बैंकों का एनपीए भी नहीं होता और जरूरत पड़ने पर उन्हें दोबारा ऋण आसानी से मिल जाता है। समूह की दीदियों के द्वारा समय पर ऋण भुगतान करने की आदत से बैंकों में जीविका के स्वयं सहायता समूहों की साख बढ़ी है।

जीविका के स्वयं सहायता समूहों के द्वारा बड़े पैमाने पर वित्तीय लेनदेन हुआ है। राज्य में सितम्बर 2023 तक 10.47 लाख स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जा चुका है। इनमें से 9.69 लाख समूहों का बैंक खाता खुल चुका है। इस अवधि तक जीविका की और से सामुदायिक संगठनों को सामुदायिक निवेश निधि (सी.आई.एफ.) के रूप में 11000 करोड़ रुपये की राशि की प्रदान की गयी है। वहीं 9.30 लाख समूहों को बैंक ऋण की पहली किस्त मिल चुकी है। इस तरह से बैंकों ने स्वयं सहायता समूहों की दीदियों को आजीविका शुरू करने के लिए अब तक करीब 29838.07 करोड़ रुपये का ऋण वितरित किए हैं। वहीं 6.77 लाख समूहों को बैंकों ने ऋण की दूसरी किस्त एवं 1.17 लाख समूहों को तीसरी एवं 25331 समूह का चौथी किस्त भी उपलब्ध कराया गया है। राज्य में 72162 ग्राम संगठनों का बैंक खाता खुल चुका है। इसके अलावा 1451 संकुल स्तरीय संघों का बैंक खाता खुल चुका है।




ग्रामीण क्षेत्रों में इतने बड़े पैमाने पर वित्तीय लेनदेन जीविका के प्रयास की वजह से संभव हुआ है। बैंकों ने ग्रामीण क्षेत्र की इन महिलाओं को वित्त पोषित करने में रुचि दिखाई है, वहीं दीदियों द्वारा ऋण वापसी भी ससमय किया जा रहा है।





# सामुदायिक संगठनों में वित्तीय अनुशासन एवं वित्तीय प्रबंधन

 Rajeev Ranjan, Manager Communication, Muzaffarpur

बीते डेढ़ दशक से दस रुपये की ताकत समझाने वाले समूह से जुड़ी महिलाएँ अपने वित्तीय प्रबंधन से अच्छे-अच्छे जानकार व्यक्तियों को प्रभावित कर रही हैं। जीविका समूह से जुड़ी लाखों महिलाएँ अपने समूह का लेखा जोखा, नियमित लेनदेन और समूह से जुड़े लेखांकन कार्यों को काफी आसान तरीकों से कर रही हैं। समूह में वित्तीय समावेशन की प्रक्रिया होने के बाद वित्तीय अनुशासन काफी महत्वपूर्ण हो जाता है। किसी भी संगठन को लंबे समय तक एकता के सूत्र में बांधने के लिए अनुशासन बेहद ही आवश्यक है। ऐसे में जीविका सामुदायिक संगठनों में वित्तीय समावेशन की धार को नई दिशा देने के लिए वित्तीय अनुशासन एक मिसाल के रूप में काम कर रहा है।

पहले समूह से जुड़ी महिलाओं को अपनी एकता का एहसास नहीं था। दस रुपये की बचत और सामाजिक तौर पर अपनी पहचान बनाने के लिए समूह से जुड़ी महिलाएँ धीरे-धीरे वित्तीय समावेशन का हिस्सा बनती गईं और बैंकों से ऋण प्राप्ति के बाद अपने भविष्य की ओर अग्रसर हुईं। वित्तीय समावेशन और समूह के खाता खोलने के बीच की गतिविधि को ऊर्जावान बनाने हेतु ससमय से



समूह की बैठक, पंचसूत्र का पालन और सामाजिक रूप से एक दूसरे का सहयोग देना बेहद आवश्यक होता है। जिसे वित्तीय अनुशासन कहा जाता है। समूहों में परियोजना की ओर से वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, जो एक ऐसी कड़ी होती है जिससे समूह से जुड़ी महिलाएँ अपना लेनदेन प्रारंभ करती हैं और आर्थिक जोखिम को उठाते हुए अपने व्यवसाय को एक नई दिशा देने की कोशिश करती हैं। ऐसे में जो ऋण समूह से जुड़ी महिलाएँ लेती हैं उसकी समय से ऋण अदायगी और उनका लेखांकन बेहद महत्वपूर्ण होता है और इसी महत्वपूर्ण कड़ी को हम वित्तीय अनुशासन कहते हैं। लाखों की संख्या में जुड़ी दीदी ससमय अपने ऋण की राशि वापस करके एक ओर जहाँ अपने समूह की आर्थिक गतिविधि को आगे बढ़ाती हैं। वित्तीय अनुशासन की एक सबसे अच्छी मिसाल है कि समय से ऋण लेना और उसकी अदायगी कर अपने आत्मसम्मान के साथ वित्तीय अनुशासन को बनाए रखता है।

समूह में सदस्यों की ऋण पुस्तिका में सदस्यों द्वारा ली जाने वाली ऋण की जानकारी प्रविष्ट की जाती है। यह कार्य जीविका मित्र द्वारा समूह से जुड़े प्रत्येक सदस्यों के पासबुक में दर्ज की जाती है, जिसके आधार पर समूह से जुड़ी महिलाएँ अपने द्वारा लिए गए ऋणों की जानकारी घर परिवार के किसी सदस्य से भी जांच करा लेती हैं। समूह से जुड़ने के बाद ज्यादातर महिलाएँ अब साक्षर हो चुकी हैं, जिन्हें अब खुद से भी अपने द्वारा किए गए वित्तीय लेनदेन की पूरी समझ हो गई है। समूह में पंच सूत्र का पालन वित्तीय प्रबंधन का एक अनोखा नियम है, जिसकी सहायता से वित्तीय अनुशासन की कड़ी को मजबूत की जाती है।

समूह में वित्तीय अनुशासन में जीविका मित्र की भूमिका अहम होती है। जीविका मित्र समूह की बैठक ससमय कराते हुए समस्त लेखांकन का कार्य करती हैं। वही समूह में किस दीदी को कितना ऋण दिया गया है। कितने माह की कितने रुपए की किरस्त होगी इसकी भी जानकारी जीविका मित्र द्वारा समूह से जुड़ी महिलाओं को दी जाती है। यही कार्य ग्राम संगठन स्तर पर लेखापाल (बुक कीपर) द्वारा किया जाता है। बुक कीपर की भूमिका वित्तीय अनुशासन में काफी महत्वपूर्ण होती है। ग्राम संगठन से जुड़े समूहों की पूर्ण ऋण अदायगी और वित्तीय लेखा-जोखा बुक कीपर के द्वारा देखा जाता है। वित्तीय अनुशासन के क्षेत्र में यह एक महत्वपूर्ण कदम है। बुक कीपर

वित्तीय प्रबंधन बेहतर तरीके से करते हैं और ग्राम संगठन से जुड़े सदस्यों की ऋण अदायगी के साथ ही ग्राम संगठन में कार्य करने वाले जीविका मित्रों के मानदेय और परियोजना कार्य के लिए दिए जाने वाले प्रोत्साहन राशि का भुगतान भी ग्राम संगठन के निर्णय के अनुसार करते हैं। बैंक और परियोजना से प्राप्त राशि का प्रबंधन करते हुए ग्राम संगठन स्तर के कार्यकारी सदस्यों को इसकी जानकारी देता है। संकुल स्तरीय संघों में मास्टर बुक कीपर द्वारा संकुल संघ से जुड़े हुए सभी समूहों को ऋण देने के बाद ससमय ऋण वापसी की जानकारी दी जाती है। ऋण अदायगी की जिम्मेदारी कार्यकारी सदस्यों को समझाते हुए लेखांकन का कार्य किया जाता है। वित्तीय प्रबंधन को दुरुस्त करने के लिए प्रतिमाह आम निकाय के प्रतिनिधि (आरजीबी) और कार्यालय संचालक सदस्यों की बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाते हैं। इसके साथ ही मासिक प्रतिवेदन में ग्राम संगठनों की ग्रेडिंग के साथ ही ऋण वापसी पर प्रमुखता से चर्चा करते हुए सभी समूह और सदस्यों से ससमय ऋण वापसी की रणनीति बनायी जाती है।







अगर ऐसा हो कि कभी कोई सदस्य ऋण की वापसी समय से ना कर पाए तो ऋण वापसी समिति द्वारा उन्हें प्रोत्साहित कर ऋण वापसी के फायदे बताए जाते हैं और उन्हें बताया जाता है कि छोटी-मोटी रकम की वापसी ना करने से आपको किस तरह की परेशानी हो सकती है। जबकि अगर आप अपनी परिस्थितियों को देखते हुए ऋण वापस करते जाते हैं तो आने वाले भविष्य में एक बड़ी राशि के रूप में आपको ऋण मिल सकती है जिससे आप आसानी से अपना कोई कारोबार भी कर सकते हैं। समय से ऋण की वापसी करने पर समूहों में साख बनती है जिसकी वजह से छोटे ऋण की अदायगी के बाद बड़े ऋण के अवसर बढ़ जाते हैं। जीविका मित्रों द्वारा ग्राम संगठन में परियोजना से आने वाले राशि के साथ ही अन्य तरह की राशि का पूरा लेखा-जोखा किया जाता है।

अगर सामुदायिक संगठनों की वित्तीय शक्ति पर नजर डालें तो बहुत सारे ऐसे ग्राम संगठन हैं जिनमें लाखों रुपए ऋण वापसी के रूप में प्रतिमाह आते हैं। ऐसे में सामुदायिक संगठनों पर वित्तीय नियंत्रण कई श्रेणी में किया जाता है। मास्टर बुककीपर और संकुल स्तरीय संघ की कार्यकारी सदस्य के समन्वय से संकुल स्तरीय संघों की लेनदेन और बैंकिंग से जुड़े सभी उचित कार्यवाही का लेखांकन पुस्तिका में अंकित होने के बाद ही हैं संपन्न किए जाते हैं। पारदर्शिता के साथ खरीदारी प्रक्रिया और खरीदारी नियम से जुड़ी सभी जानकारियों का प्रशिक्षण हर समुदायिक संगठन के सदस्यों को दिया गया है

ताकि किसी भी प्रकार की खरीदारी में खरीदारी नियमों के तहत की खरीदारी की जाए। इस वजह से पारदर्शिता बनी रहती है और सदस्यों में एक दूसरे पर विश्वास बना रहता है। वित्तीय अनुशासन और वित्तीय प्रबंधन दोनों ही खरीदारी नियमों में सर्वोपरि होता है।

इस तरह से देखा जाए तो लाखों जीविका दीदियाँ अपने सपनों को वित्तीय प्रबंधन और अनुशासन की मदद से साकार कर रही हैं। वह अच्छी तरह से जानती हैं कि एक छोटा सा ऋण उनके जीवन को किस प्रकार से बदल रहा है। वित्तीय अनुशासन के साथ वह अपनी और अपने परिवार का बेहतर वित्तीय प्रबंधन करते हुए अपना भविष्य उज्ज्वल कर रही हैं।







# Jeevika Didi as Bank sakhi A Livelihood Opportunity

 Juhi, Manager Communication, Khagaria

JEEVIKA continually endeavours to initiate various schemes aimed at enhancing the socio-economic status of its members. A plethora of amenities and programs are extended to our society through the 'Yojana,' thereby ameliorating the quality of life of the associated households. Among these commendable initiatives, the 'Bank Sakhi Yojana' was launched with the dual purpose of providing financial support to women residing in rural areas and bolstering the banking infrastructure, akin to the women's empowerment model established by JEEVIKA.

The 'Bank Sakhi Yojana' operates as a pivotal conduit between the banking sector and self-help groups situated in rural regions. Women associated with self-help groups, endowed with the ability to read and write, and possessing a rudimentary comprehension of banking principles, are eligible to assume the role of a 'Bank Sakhi.' Moreover, candidates aspiring to be 'Bank Sakhi' must exhibit a minimum educational qualification of having passed the 10th grade. The responsibilities bestowed upon these select 'Bank Sakhi' individuals encompass disseminating information pertaining to government-sponsored schemes through door-to-door visits, while concurrently educating citizens about the available banking services.

Furthermore, the core responsibilities of the 'Bank Sakhi' extend to facilitating various banking operations by personally visiting the homes of their members. The mission of JEEVIKA has consistently endeavoured to empower women and connect them to fresh employment opportunities. The 'Bank Sakhi Yojana' stands as a noteworthy embodiment of this commitment, accentuating both women's



empowerment and employment, as envisaged by JEEVIKA. This scheme affords new avenues of employment to the women associated with JEEVIKA thereby improving their livelihood prospects.

The ramifications of this scheme have been profound, not only for the 'Didis' of JEEVIKA but also for the residents of the panchayat and the surrounding villages. A comprehensive range of banking facilities, including savings accounts, money transfers, cash withdrawals, and ATM services, is now readily accessible within their own panchayat and village. This convenience has alleviated the necessity for individuals to traverse great distances, thereby extending banking facilities to the neighbouring regions. Consequently, it has ushered in an era of holistic development for the 'Didi,' her family, and the villages and panchayats within her vicinity.

The journey of a 'JEEVIKA Didi' as a 'Bank Sakhi' was far from facile, marked by resistance from societal elements. Nevertheless, this pioneering scheme has played an instrumental role in transforming societal mindsets and eradicating conservative ideologies. Subsequently, 'Jeevika Didis' achieved recognition and acclaim within their communities, serving as a source of inspiration for others to partake in the 'Bank Sakhi Scheme.' A multitude of women, inspired by the resilience of these pioneers, have embraced this opportunity and are now generating sustainable incomes, thereby reshaping their lives and the broader society.

The 'Bank Sakhi' scheme has not only empowered innumerable women to step out of the confines of their homes, but also allowed them to participate in financial endeavours, which include savings, insurance sales, and money handling on behalf of their communities. In essence, the scheme has acted as a cornerstone for the inclusion of rural areas in the financial mainstream. This program has significantly broadened the accessibility of financial services to all members of society, including those with limited literacy. In summation, the 'Bank Sakhi Yojana' has catalysed widespread financial inclusion and ushered in transformative and positive changes across our society.







# वित्तीय समावेशन में हेल्प डेस्क की कार्यनीति एवं भूमिका

 Vivek Kumar, Manager Communication, Madhubani

बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं को जीविका स्वयं सहायता समूह के माध्यम से सामाजिक स्तर पर संगठित करते हुए उन्हें स्वरोजगार से जोड़ा जा रहा है। इसके लिए स्वयं सहायता समूहों को वित्त पोषित करने के साथ ही तमाम वित्तीय सेवाओं तक उनकी पहुंच आसान की गई है। वित्तीय समावेशन के तहत स्वयं सहायता समूहों एवं उनके सदस्यों का बैंकों में बचत खाता खुलवाया जाता है, समूहों को जीविका परियोजना के द्वारा आरंभिक पूंजीकरण निधि उपलब्ध कराई जाती है और बैंकों के माध्यम से ऋण उपलब्ध कराए जाते हैं। इससे समूह स्तर पर पर्याप्त वित्तीय तरलता बनी रहती है। जीविका स्वयं सहायता समूह की वजह से ही आज ग्रामीण स्तर पर गरीब परिवारों को महाजन या अन्य अनौपचारिक वित्तीय व्यवस्थाओं से मुक्ति मिली है। स्वयं सहायता समूह से जुड़े सदस्य आवश्यकतानुसार अपने समूह से ऋण लेते हैं। इससे वे अपनी मूलभूत जरूरतों की पूर्ति के अलावा विभिन्न प्रकार के स्वरोजगार शुरू करते हैं। स्वरोजगार से प्राप्त आय से वे समूह में नियमित रूप से ऋण की वापसी कर रहे हैं। समूह सदस्यों द्वारा समूह में नियमित ऋण वापसी किये जाने से बैंकों को भी नियमित रूप से ऋण का भुगतान किया जाता है। यही कारण है कि बैंकों में जीविका समूह की ऋण वापसी की दर काफी अच्छी है। परिणामस्वरूप यहां एन.पी.ए. खातों की संख्या नियंत्रित हैं। इसके अलावा समूह के सदस्यों का बीमा कराया जाता है। साथ ही साथ बैंक सखी या ग्राहक सेवा केंद्र के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर बैंकिंग सेवाओं की पहुंच आसान की जा रही है।



वित्तीय समावेशन के तहत उपरोक्त लक्ष्यों की पूर्ति हेतु जीविका के द्वारा हेल्प डेस्क का प्रावधान किया गया है। प्रत्येक प्रखंड परियोजना क्रियान्वयन स्तर पर एक हेल्प डेस्क का गठन किया गया है। हेल्क डेस्क जीविका स्वयं सहायता समूहों को वित्तीय समावेशन से जोड़ने हेतु परियोजना एवं सामुदायिक संगठनों के बीच एक सेतु की भूमिका निभाता है। हेल्प डेस्क में ऐसी किसी समूह की दीदी का चयन किया जाता है जो आमतौर पर पढ़ी-लिखी हो और उनमें बैंकिंग व्यवस्थाओं के बारे में बुनियादी समझ हो। हेल्प डेस्क हेतु चयनित दीदी प्रत्येक दिन बीपीआईयू कार्यालय पहुंचकर स्वयं सहायता समूहों से नियमित संवाद स्थापित करती है। प्रत्येक स्वयं सहायता समूह एवं उनके सदस्यों को वित्तीय समावेशन के तहत तमाम बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित कराने में हेल्प डेस्क की उल्लेखनीय भूमिका रही है। हेल्प डेस्क के द्वारा समूह एवं सामुदायिक उत्प्रेरक (सी.एम.) से संपर्क कर बैंक खाता खुलवाने हेतु दस्तावेज तैयार कराने, इसे ससयम बैंकों में जमा करवाने, बैंक खाता खुल जाने के उपरांत आरंभिक पूंजीकरण निधि हेतु दस्तावेज तैयार करवाने, समूह की नियमित बैठक की सूचना प्राप्त करने, समूह स्तर पर नियमित लेन-देन और नियमित ऋण वापसी की सूचना संग्रहित करने का कार्य किया जाता है। प्रखंड स्तर पर सभी समूहों से प्राप्त सूचनाओं को संग्रहित और समेकित करने के उपरांत इसे प्रखंड परियोजना प्रबंधक के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर ऐसे समूहों को चिह्नित किया जाता है जहां ऋण की उपलब्धता या ऋण वापसी में किसी प्रकार की समस्या है। ऐसे समूहों पर विशेष ध्यान देते हुए वित्तीय समावेशन के लक्ष्यों की पूर्ति में आने वाली बाधाओं को दूर किया जाता है।

हेल्प डेस्क द्वारा किया जाने वाला प्रमुख कार्य निम्न प्रकार है—

- जीविका स्वयं सहायता समूहों से नियमित संवाद स्थापित कर समूह स्तर पर वित्तीय समावेशन के लक्ष्यों की पूर्ति हेतु सूचनाओं का संग्रह करना।
- सामुदायिक उत्प्रेरकों से नियमित संवाद स्थापित कर समूह की नियमित बैठक, नियमित लेन-देन और नियमित ऋण वापसी के संबंध में सूचनाओं का संग्रहण एवं प्रोत्साहन।
- समूह द्वारा बैंकों में नियमित ऋण वापसी हेतु निरंतर



संवाद एवं प्रोत्साहन।


- पी.एन.पी.ए और एन.पी.ए खातों की सूचना संबंधित स्वयं सहायता समूहों तथा सी.एम. देते हुए उन्हें बैंक के ऋण खाते में राशि का भुगतान करने हेतु उत्प्रेरित करना।
- स्वयं सहायता समूह को वित्तीय साक्षरता के महत्व एवं इसकी प्रक्रिया के बारे में बताना एवं इन्हें बढ़ावा देना।
- स्वयं सहायता समूह को ससयम परिक्रमी निधि और आरंभिक निवेश निधि उपलब्ध कराने हेतु प्रयास करना।
- 6 माह पुराने स्वयं सहायता समूह को बैंक क्रेडिट लिंकेज हेतु दस्तावेज तैयार कराने में मदद करना।
- जीविका समूह के सदस्यों को वित्तीय साक्षरता एवं ब्याज में छूट के बारे में जानकारी उपलब्ध कराना तथा ब्याज में छूट प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित करना।







# जीविका दीदियों को बीमा ने दिया सहारा

 Dinesh Kumar, Manager Communication, Gaya

गरीबी उन्मूलन एवं महिला सशक्तीकरण की दिशा में जीविका निरंतर प्रयासरत है। सामुदायिक संगठनों के माध्यम से जीविका दीदियों को एक मजबूत आधार मिला है। वहीं वित्तीय समावेशन के द्वारा उन्हें बैंकिंग सेवाओं का लाभ मिल रहा है। जीविका परियोजना के तहत संचालित विभिन्न जीविकोपार्जन गतिविधियों, सामाजिक विकास, स्वास्थ्य एवं पोषण, कौशल विकास आदि के माध्यम से उन्हें लाभ पहुँच रहा है। इससे उनके जीवन में गुणात्मक बदलाव आया है और उनका आत्मविश्वास बढ़ा है।

इन सभी प्रयासों के बावजूद कई बार अनावश्यक जोखिमों का खतरा बना रहता है। परिवार के संचालन में योगदान करने वाले व्यक्ति की आकस्मिक क्षति होने पर परिवार पर दुखों का बोझ आ जाता है। इन्हीं आकस्मिक जोखिमों को ध्यान में रखते हुए समूह सदस्यों का बीमा कराया जाता है। किसी भी परिवार को आकस्मिक क्षति की स्थिति में बीमा एक सहारा देता है। यह परिवार के लिए एक सुरक्षा कवच है, जो परिवार को विपरीत परिस्थिति में आर्थिक सहायता प्रदान करता है। ऐसी घड़ी में बीमित व्यक्ति के परिवार को किसी के आगे हाथ फैलाने की नौबत नहीं आती है।

जीविका परियोजना अन्तर्गत जीविका समूह से जुड़े सदस्यों को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना एवं प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के तहत बीमा कराया जाता है। समूह से जुड़े सभी सदस्यों को बीमा करवाने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। इसके लिए उन्हें



बीमा के महत्व एवं इसके लाभों के बारे में जानकारी दी जाती है। जीविका दीदियों को विभिन्न माध्यमों— किसी घटना/दुर्घटना, केस अध्ययन, वीडियो फिल्म आदि के माध्यम से जागरूक करते हुए उन्हें बीमा कराने हेतु प्रेरित किया जाता है। इन प्रयासों का ही परिणाम है कि आज जीविका समूह से जुड़े तकरीबन 80 फीसदी से ज्यादा सदस्य बीमित हैं।



**प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना**— समूह से जुड़े 18 से 50 वर्ष के आयु की दीदियों को इस योजना के तहत बीमा कराया जाता है। इसकी प्रीमियम राशि प्रतिवर्ष 436 रुपये है। जिन सदस्यों के पास बैंक में अपना बचत खाता है और इस योजना से जुड़ने हेतु अपने खाते से ऑटो-डेबिट के लिए सहमति देता है, उनका बीमा कराया जाता है। इसकी समयावधि 1 जून से 31 मई के बीच होती है। प्रत्येक वर्ष इसका नवीनीकरण कराया जाता है। इस योजना के तहत बीमित सदस्य की किसी दुर्घटना में मृत्यु हो जाने की स्थिति में 2 लाख रुपये के बीमा सुरक्षा का प्रावधान है।

**प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना**— समूह से जुड़े 18 से 70 वर्ष की आयु वर्ग के सदस्यों को प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना के तहत बीमा कराया जाता है। इसकी प्रीमियम राशि 20 रुपये वार्षिक है। जिन सदस्यों के पास बैंक में अपना बचत खाता है और इस योजना से जुड़ने हेतु अपने खाते से ऑटो-डेबिट के लिए सहमति देता है, उनका बीमा कराया जाता है। इस बीमा योजना की अवधि 1 जून से 31 मई के बीच होती है। योजना के अंतर्गत दुर्घटनावश मृत्यु होने अथवा पूर्ण विकलांगता के लिए जोखिम कवरेज 2 लाख रुपये तथा आंशिक विकलांगता पर जोखिम कवरेज 1 लाख रुपये है।

एक महिला अपने परिवार की अति महत्वपूर्ण सदस्य होती हैं। परिवार को उसकी क्षति होने पर घोर आघात पहुँचता है। वर्तमान समय में जीविका दीदियां अपने परिवार की उन्नति में उल्लेखनीय भूमिका निभा रही हैं। ऐसे में उपरोक्त दोनों सामाजिक सुरक्षा बीमा योजनाओं से जीविका दीदियों को जोड़ा जा रहा है। ताकि किसी कारण उनकी आकस्मिक मृत्यु हो जाने की स्थिति में उनके परिवार को आर्थिक सहारा मिल सके। जीविका दीदियों के परिवार के अन्य वयस्क सदस्यों को भी बीमा करने हेतु प्रेरित किया जाता है। जिससे उनके परिवार को बीमा के माध्यम से सुरक्षा प्रदान किया जा सके।

बीमा के कारण जीविका समूह से जुड़े कई परिवारों को सहारा मिला है। ऐसे कई उदाहरण हैं जिसमें जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी दीदियों ने समूह से जुड़े होने के कारण अपना बीमा करवाया था। किसी कारण उनकी आकस्मिक मृत्यु हो जाने की स्थिति में उनके परिवार को मुसीबत के समय आर्थिक सहयोग मिला। उदाहरण के तौर पर गया जिले के वजीरगंज प्रखंड की सहोदरी देवी दुर्गा जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य थी। जीविका में जुड़कर दीदी नियमित बचत करती थी। वह अपने परिवार भरण-पोषण में काफी योगदान दे रही थीं। मगर दुर्भाग्यवश पिछले वर्ष बीमारी के कारण 40 वर्ष की उम्र में ही उनका निधन हो गया। ऐसे में उनके परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। ऐसी घड़ी में बीमा ने उनके परिवार को काफी मदद किया। सहोदरी देवी ने अपने समूह के माध्यम से प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत अपना बीमा कराया था। ऐसे में सहोदरी दीदी की अचानक मृत्यु होने जाने से उनके परिवार को 2 लाख रुपये का बीमा कवर मिलना था। इसके लिए सभी आवश्यक दस्तावेज तैयार कराए गए और बीमा कंपनी को प्रेषित किये गए। निर्धारित प्रक्रियाओं के उपरांत बीमा कंपनी की ओर से सहोदरी देवी के परिवार को 2 लाख रुपये बीमा कवरेज प्राप्त हुआ। बहरहाल सहोदरी दीदी के अचानक गुजर जाने से परिवार को उनकी कमी तो हमेशा खलेगी। उनकी क्षतिपूर्ति संभव भी नहीं है। मगर विपत्ति की इस घड़ी में परिवार एवं बच्चों को थोड़ी आर्थिक राहत जरूर मिली। उनके पति पशुराम

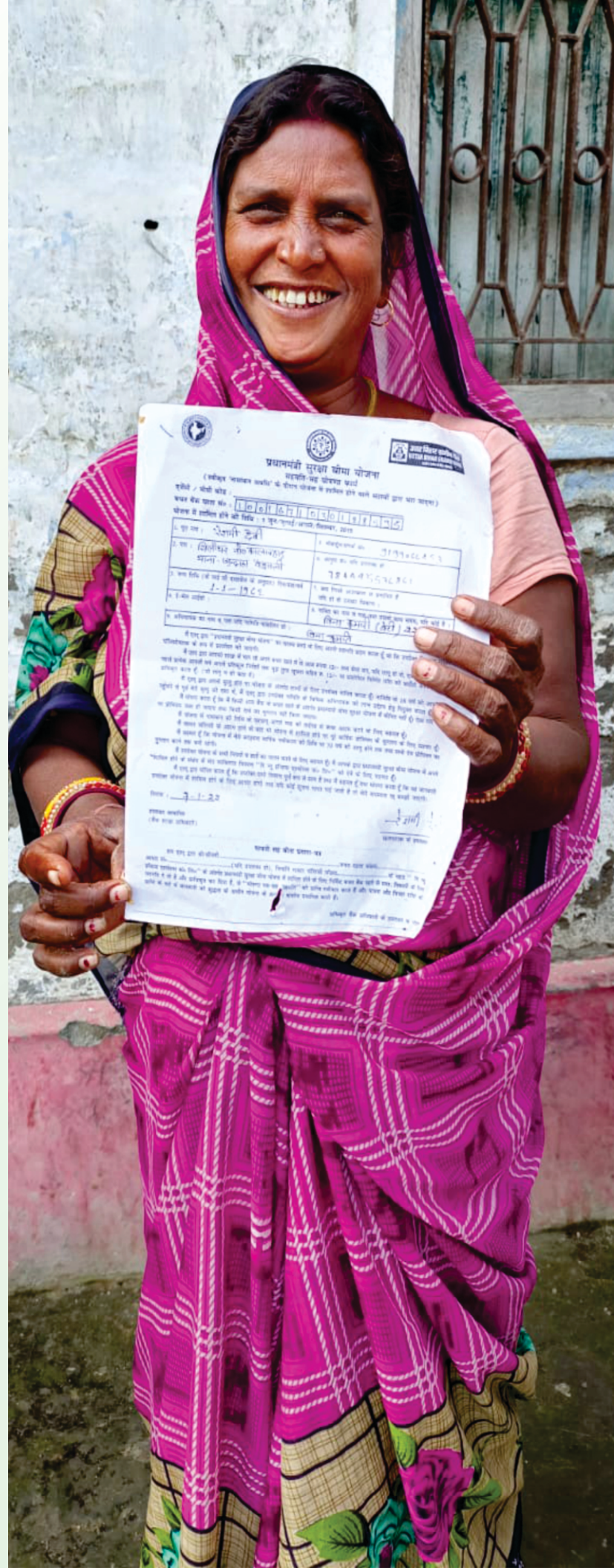


कुमार ने बीमा कवरेज के रूप में प्राप्त राशि का उपयोग ऋण अदायगी के अलावा परिवार की आवश्यक जरूरतों की पूर्ति हेतु किया।

इसी प्रकार बेलगंज प्रखंड के पनारी की रहने वाली रूपा देवी की भी बीमारी के कारण असमय मृत्यु हो गई थी। उनके परिवार को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत बीमा कवरेज के रूप में दो लाख रुपये की आर्थिक मदद मिली। इससे इनके परिवार को मुश्किल समय में राहत मिली। गया जिले के खिजासराय प्रखण्ड के सरबहदा गांव की निवासी सतन देवी के आकस्मिक निधन हो जाने से परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूट गया। वह खुशबू जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हुई थी। वह समूह में साप्ताहिक बचत और नियमित लेन-देन करती थी। परिवार संचालन में उनकी अहम भूमिका थी। असमय मृत्यु से परिवार को काफी क्षति पहुँची। सतन देवी ने प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत बीमा अपना बीमा करवाया था। इसके कारण उनके देहांत के पश्चात उनके परिवार को इस बीमा योजना के तहत दो लाख रुपये की आर्थिक सहायता मिली। बीमा की राशि का भुगतान सभी कागजात जमा करने के कुछ समय पश्चात सतन देवी के पति अनिल प्रसाद को दिया गया। इस आर्थिक सहायता से उन्हें विपरीत परिस्थितियों में थोड़ी राहत मिल सकी।

खिजासराय प्रखण्ड के बलियारी गांव की निवासी क्रांति देवी राधा जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य थी। उन्होंने प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत बीमा कराया था। उनके पति सत्यनारायण स्थनीय बैण्ड में बाजा बजाने का कार्य करते हैं। तभी दुर्घटनावश क्रांति देवी का निधन हो गया। इससे परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। हालांकि इस घड़ी में उनके परिवार को बीमा से सहारा मिला। आवश्यक दस्तावेज जमा कराने एवं निर्धारित प्रक्रियाओं के उपरांत क्रांति देवी के परिवार को बीमा कवरेज के रूप 2 लाख रुपये प्राप्त हुए। इस स्थिति में उनके परिवार ने थोड़ी राहत महसूस की।

उपरोक्त उदाहरणों से यह प्रतीत होता है कि बीमा की वजह से विपत्ति की घड़ी में परिवार को एक सहारा मिलता है। उन्हें तत्काल अपनी जरूरतों के लिए किसी के आगे हाथ फैलाने की नौबत नहीं रहती है।







# Community Finance and The Role of CBO level Community Professionals

 Archana Khushi, Manager Communication, Jehanabad

The Bihar Rural Livelihoods Project (BRLP), an initiative spearheaded by the Government of Bihar (GOB), was instituted with the overarching objective of empowering the rural poor, both socially and economically. At the helm of this endeavour stands the Bihar Rural Livelihoods Promotion Society (BRLPS), an autonomous entity operating under the aegis of the Department of Rural Development. It was instrumental in overseeing the World Bank-assisted Bihar Rural Livelihood Project (BRLP), which is colloquially recognized as JEEVIKA. This organization's paramount focus revolves around the empowerment of women through the establishment of community-based organizations.

JEEVIKA adopts a distinctly women-centric approach, wherein the members of Self-Help Groups (SHGs) led by women are cast as the

catalysts of transformation. They labour indefatigably, not only to engineer economic metamorphosis at the household level but also to ensure a broader societal transformation encompassing the entire village community. By enlisting the active participation of rural households, self-help groups are formed, thereby heralding both social and economic empowerment for the rural underprivileged.

The foundational building block of this community-driven institution materializes in the form of JEEVIKA Self-Help Groups (SHGs). These SHGs are subsequently federated at the village level, culminating in the establishment of JEEVIKA Village Organizations (VOs). These VOs, in turn, are further aggregated at the cluster level, giving rise to Cluster Level Federations (CLFs). It is noteworthy that, in various regions across the state, more than ten lakh SHGs have been



brought into existence.

Jeevika's mandate extends beyond the purview of welfare programs; it is actively involved in the empowerment of the impoverished and marginalized segments of society. The organization's unremitting efforts have revolved around enhancing the well-being of households, thereby mitigating vulnerability and dependence. It has achieved this through innovative financial instruments such as Food Security Funds and Health Risk Funds. The paramount goal of JEEVIKA has perennially been the empowerment of women, a pivotal avenue toward fostering societal prosperity.

In support of Self-Help Groups (SHGs), Village Organizations (VOs), and Cluster Level Federations (CLFs) in their daily operations and financial management, a dedicated thematic focus is relentlessly pursued, known as "Community Finance." A dedicated team operating under this thematic domain works assiduously to facilitate the seamless functioning of community institutions and their financial affairs. To this end, a dedicated cadre of individuals has been identified, trained, and deployed to provide support to SHGs, VOs, and CLFs.

This cadre comprises three distinct roles within the ambit of community finance:

Community Mobilizer (commonly referred to as CM)

Book Keeper (commonly referred to as BK)  
Master Book Keeper (MBK)

Community mobiliser:-

The Community Mobiliser (CM) is a vital position for the community professional within the framework of Village Organizations (VOs). Typically, a CM is a member of JEEVIKA SHGs, who serves as a facilitator for Self-Help Groups

(SHGs). These individuals possess a minimum educational qualification of at least having completed the 7th grade. Their identification and selection are endorsed by the SHGs, with the mobilization team involving representatives of SHGs to assess the suitability of candidates, subsequently forwarding the list to the Block Project Implementation Unit (BPIU) for their formal training.

Upon selection, the CM initially functions as an intern until the formal formation of the VO. They enter into a formal agreement with the VO for an initial duration of one year, with the possibility of an extension based on their performance. During the internship period, these selected interns undergo intensive training programs to equip them with the requisite skills and knowledge.

The principal responsibility of a CM revolves around facilitating SHG meetings, meticulously maintaining the SHG records, and nurturing the overall development of the group. Typically, a Community Mobiliser oversees the affairs of 10-12 SHGs, actively participating in all their weekly meetings and guiding the meeting processes to instill the fundamental concept of







"PANCHSUTRA" within the SHGs. Furthermore, they bear the responsibility of conducting a micro plan for the SHGs affiliated with the respective VO.

During the training period, these CMs receive an honorarium of 1200/- rupees per month. Subsequently, in their first year of formal employment, they receive an honorarium of 240 rupees per SHG. Over the course of their tenure, the honorarium increases gradually. The maximum honorarium received by a seasoned CM amounts to 400 rupees per SHG per month, equivalent to 4000 rupees for overseeing 10 SHGs. It is important to note that this honorarium is sourced from the compulsory savings made by the SHGs each month, and these funds are disbursed to the CM as a form of remuneration by the VO. Additionally, there is a progressive reduction in the contribution required from the VO and the overarching project as the CM gains experience and tenure within the organization.

Bookkeeper: -

Within the ambit of this project, Village

Organizations (VOs) are entrusted with the crucial responsibility of providing an array of financial and social services to Self-Help Groups (SHGs). These services encompass the management of savings within the SHGs, the coordination of Cluster Level Federations (CLFs), supervision of Community Mobilizers (CMs) and their associated honorariums, Health Risk Funds (HRF), Food Security Funds (FSF), and more. Additionally, many VOs are actively involved in availing various services and benefits offered by government schemes and programs. Given the wide spectrum of services extended by VOs to SHGs, the timely and meticulous upkeep of financial records and the nurturing of the VOs stand as paramount imperatives.

In this context, the role of a "VO Bookkeeper" assumes significant importance, serving as a part-time staff member within the CLF structure. The VO Bookkeeper enters into a formal agreement with the CLF, delineating roles, responsibilities, payment procedures, appraisal mechanisms, and other pertinent details. Each VO Bookkeeper is capable of providing services to a maximum of five VOs. Ideally, a VO Bookkeeper is recruited from the rural populace, often hailing from the ranks of SHG members or being the spouse or ward of an SHG member. The







minimum educational qualification for a VO Bookkeeper is set at the 10th grade level.

Selected BK, during their training period, undergo comprehensive training to equip them with the requisite skills. The primary responsibility of a Bookkeeper revolves around facilitating VO meetings, meticulously recording the organization's financial transactions, and nurturing the overall growth and development of the VO. They actively participate in all VO meetings and guide the meeting processes to instill the fundamental concept of "SAPTASUTRA" within the VO. Furthermore, they compile various financial reports on a monthly basis and provide guidance and supervision to Community Mobilizers (CMs) to ensure effective bookkeeping practices.

A single VO Bookkeeper is allocated to oversee a maximum of five VOs. During their internship period, these individuals receive a stipend of 1600/- rupees per month for managing five VOs. Subsequently, in their first year of formal employment, they receive an honorarium of 3200 rupees for overseeing five VOs. The honorarium incrementally rises with each passing year of service. The highest honorarium received by a seasoned VO Bookkeeper amounts to 400 rupees per VO per month, totalling 5600 rupees per month for managing five VOs. The VOs

contribute compulsory savings every month, which are subsequently disbursed to the Bookkeeper as a form of remuneration from the CLF. Additionally, there is a gradual reduction in the contribution required from the CLF and the overarching project as the Bookkeeper's experience and tenure within the organization progress.

Cluster Level Federation Bookkeeper:-

The JEEVIKA project is dedicated to the comprehensive mobilization of rural women who are economically disadvantaged. It plays a pivotal role in establishing and nurturing robust community institutions, such as Self-Help Groups (SHGs), which are then organized into various hierarchical levels to facilitate the disbursement of benefits to SHG members. These community-based organizations are instrumental in advancing the socio-economic empowerment of their constituents, granting access to livelihood opportunities, entitlements, and coordinated efforts from different governmental departments. To ensure the effective operation of these Community-Based Organizations (CBOs), the meticulous maintenance of financial records and bookkeeping is of paramount importance, serving to develop a sound financial system and foster transparency.







# Digital Financial Inclusion

 Arpan Mukherjee, YP-KMC

JEEViKA has brought a significant transformation in the domain of Financial Inclusion with its special focus on Digitization. Digital Financial Inclusion of JEEVIKA has encompassed the utilization of cost-effective digital Management Information System to monitor the progress of the accessed formal financial services that are tailored to the needs of marginalized and financially deprived individuals, in a responsible manner that is feasible.

The development of various in-house mobile and web-based applications for digitization of financial inclusion of JEEVIKA self-help group is a significant step towards empowering women in rural areas. These applications include Adhar and Insurance Digitization, Receipt and Payment of Village Organization and Cluster Level Federation, web based dashboard for savings and credit linkages, CLF transactions and so on. With these applications, members of the

JEEVIKA self-help group can access to various information on financial services and information related to various government schemes and entitlements on their smartphones. The app makes it easier for the staffs to keep track of the members' savings and loan transactions, identify the gaps and apply for loans, and receive alerts and notifications. This digitization of financial services not only makes them more accessible but also provides transparency and accountability in the financial operations of the Community Based Organization. Furthermore, the mobile application is cost-effective, reduces paperwork, and ensures faster processing of transactions, making financial inclusion more efficient and effective.

JEEVIKA has achieved a significant milestone in empowering women and marginalized communities across the rural hinterlands of Bihar. The successful savings linkage on self-help



groups, amounting to a substantial sum of 9.6 lakhs, has bestowed upon these groups the much-needed access to financial resources for their livelihood pursuits, while also inculcating a sense of financial prudence and accountability among the members. Furthermore, JEEVIKA's facilitation of credit linkage amounting to an outstanding sum of Rs. 28919.58 Crore has not only provided a critical financial lifeline to the rural poor in times of exigencies but has also reinforced their financial resilience.

Digital financial inclusion entails the implementation of innovative digital technologies to extend formal financial services to those presently excluded from the financial mainstream or underserved by conventional financial institutions. The provision of such services must be cost-effective and cater to the specific requirements of the target population while being economically sustainable for the service providers. However, the adoption of digital financial services introduces several potential hazards, including the entry of non-financial entities into the financial sector, the establishment of novel contractual arrangements between financial institutions and third parties, regulatory



disparities in treating deposit-like products, unforeseen costs for vulnerable consumers, and the application of pioneering forms of data that engender privacy and security concerns.

The essential components of digital financial inclusion comprise digital transactional platforms that has enabled the members to partake in electronic transactions, such as payments, transfers, and storage of value, through electronic devices that communicate with banks and Customer Service Points (CSPs) that hold electronic value. Digital devices are provided to the Banking Correspondents or Bank Sakhis running CSPs with digital point-of-sale terminals. Banking Correspondents are equipped with digital devices and communication infrastructure facilitate the conversion of physical currency into electronic value and vice versa. Moreover, digital financial inclusion has provided with a diverse range of additional financial services, such as credit, savings, insurance, and securities, using digital data to manage risk and target potential customers, thereby extending the benefits of financial inclusion to underserved and marginalized communities.







### JMCLF's-SHG Digitization (A Path to Gramin CIBIL)

- An In house software has been developed by MIS team with the help of CF team at SPMU level.
- Developed training Module for entry and preparation of Cut off Data.
- Developed format for Capturing the transactional data.
- SHG Digitization process is implemented in 32 BTDP Model CLF's
- Virtual Orientation of CF Managers and Anchor Persons has been done on the Software.
- ToT from 32 BTDP Model CLF has been done by SPMU.
- Monthly meeting is being conducted to know the progress
- 216 RBK's(Resource Bookkeepers) has been identified by various districts.
- 9 batches of RBK;s training has been done by districts.

## LOKOS

### Salient Features

- Data(Profile) Migrated from NRLM MIS
- No need to enter data base again
- Integration with NRLM MIS
- Application to digitised CBOs meetings across states.
- Web based application for (State /Districts /Blocks) and android based application for E-Bookkeepers.
- Maker & Checker Concept applicable

- Analytical Reports and Dashboard.
- E-KYC, De-Duplication, transaction capture at source

### Integrated solution for SHGs and their federations

- Register members, create CBOs and capture & validate their information
- Manage operations such as attendance, savings, loans disbursement, and repayments, book-keeping and other financial activities
- Seamless interface with existing NRLM / SRLM applications
- Respective CBOs and members can view their data either on the app or through social media applications

### Single source of up-to-date and validated data for NRLM/SRLM

- Detailed analytics on data available in form of dashboards with interactive charts, including drillable spatial maps
- Monitor performance of CBOs, SHG members and their joint or individual enterprises or livelihood activities
- Take immediate actions and plan targeted interventions





# दीदी की कहानी

# दीदी की जुबानी



**केस-1** पारो देवी ने ठान लिया तो घर वालों ने भी मान लिया

## ग्राहक सेवा केन्द्र से किरण के जीवन में फैला उजाला

Santosh Kumar, Manager Communication, Samastipur

किरण देवी, समस्तीपुर के सदर प्रखंड के मोहनपुर ग्राम की निवासी हैं। किरण के परिवार में कुल चार सदस्य हैं। किरण देवी के पति कुमोद समस्तीपुर में प्राइवेट नौकरी करते हैं। पति की कमाई से परिवार का भरण-पोषण सही से नहीं हो पाता था। परिवार आर्थिक तंगी से गुजर रहा था। बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं मिल पा रही थी। किसी तरह जीवन चल रहा था। तभी जीविका कर्म से स्वयं सहायता समूह की जानकारी मिली और किरण देवी भारती स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। उन्होंने नियमित बैठक में भाग लेने और नियमित बचत करने लगी। कुछ समय बाद समूह से 13000 ₹ ऋण लेकर किराना का दुकान खोली। दुकान की आमदनी से 10 माह में ही समूह का ऋण वापस कर दिया और अपने कारोबार को बढ़ाने के लिए समूह से दुबारा 40 हजार ₹ का ऋण लेकर दुकान को बढ़ाया। फलस्वरूप दुकान से 500 से 700 ₹ की प्रतिदिन की आमदनी होने लगी। अधिक आमदनी होने से वह अपने परिवार को भरण-पोषण सही तरीके से करने लगी। साथ ही बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ाने लगी। उनकी आर्थिक स्थिति में भी काफी सुधार हो रहा है।





किरण देवी को गौरव जीविका ग्राम संगठन के माध्यम से बैंक सखी की बहाली की जानकारी प्राप्त हुई। किरण देवी ने भी बैंक सखी के पद पर चयन हेतु आवेदन किया। लिखित एवं मैखिक परिक्षा के उपरांत इनका चयन बैंक सखी के रूप में हुआ। तब ग्राम संगठन के माध्यम से किरण देवी को 55 हजार रू0 ग्राहक सेवा केन्द्र स्थापित करने के लिए मिला। जिसमें 10 हजार रू फर्नीचर हेतु एवं 15 हजार मानदेय के रूप में 2500 रू प्रतिमाह की राशि से 6 माह के लिए मिला। इन्हें जीविका द्वारा सात दिनों प्रशिक्षण भी दिया गया और इन्हें आईआईबीएफ के द्वारा प्रमाण पत्र भी दिया गया। जिसके बाद उन्होंने ग्राहक सेवा केन्द्र का संचालन सुचारु रूप से शुरू किया। किरण देवी ने फिनो बैंक के सहयोग से ग्राहक सेवा केन्द्र की शुरुआत की। किरण देवी के द्वारा अपने पंचायत में ग्राहक सेवा केन्द्र के माध्यम से बैंकिंग सुविधा प्रदान की जा रही है। ग्राहक सेवा केन्द्र के माध्यम से किरण देवी को अतिरिक्त आय के रूप में 5000 से 6000 रू प्रतिमाह भी प्राप्त होने लगा। किरण देवी के द्वारा ग्राहक सेवा केन्द्र के माध्यम से खाता खोलना, जमा एवं निकासी तथा अन्य बीमा संबंधित सेवाएं प्रदान की जाती है। आज किरण देवी के परिवार की आर्थिक स्थिति में काफी सुधार आया है। वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे पा रही हैं ताकि उनका भविष्य उज्ज्वल हो सके। वह आज खुशहाल जीवन व्यतित कर रही हैं। वह जीविका के सहयोग से अपने कारोबार को भी आगे बढ़ाने का काम कर रही हैं।

## केस-2 सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन

# रीता ने स्वावलंबन की दिखाई राह

 Roshan Kumar, Manager Communication, Lakhisarai

ग्रामीण क्षेत्र में कई ऐसी महिलाओं ने सामाजिक कुरीतियों को दरकिनार करते हुए स्वयं सहायता समूह के बल पर एक मुकाम हासिल किया है। उन महिलाओं में से एक हैं लखीसराय जिला अंतर्गत शिवसोना गाँव की रीता देवी। रीता देवी के पति मुंबई की एक फैक्ट्री में मजदूरी करते हैं। उन्हें वहां इतना मेहनताना नहीं मिल पाता है कि अपने गाँव कुछ भी राशि भेज सकें। लिहाजा रीता ने खुद अपने बल पर अपने बच्चों के जीवनयापन के लिए व्यवसाय करने की सोची। रीता देवी पार्वती जीविका स्वयं सहायता समूह के संबल से अपने गाँव में कुशल व्यापारी के रूप में पहचान बना रही हैं। मैट्रिक पास रीता बताती हैं कि जीविका समूह से जुड़ने का विरोध उनके ससुराल में हो रहा था। फिर भी वह अपने पति से बात की और वर्ष 2017 पार्वती जीविका महिला स्वयं



सहायता समूह से जुड़ गयीं। जिसके बाद उन्होंने जीविका मित्र के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। वर्ष 2020 में कोरोना काल में जब आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई तब रीता देवी ने किराना दुकान खोलने की चर्चा अपने ससुराल के लोगों से की। ससुराल के लोग आर्थिक तंगी और किसी महिला के द्वारा किराना दुकान चलाने के मुद्दे पर सहमत नहीं थे। ऐसे में रीता ने अपने पति की सहमति से अपने मकान में ही किराना दुकान चलाने के लिए समूह से 35 हजार रूपया ऋण लिया। शहर से किराना का सामान थोक भाव में लाकर किराना दुकान खोल लिया। गाँव में ही दुकान होने से ग्रामीणों को अब गाँव से दूर नहीं जाना पड़ता है। दुकान से बिक्री भी उम्मीद से ज्यादा हो रही है। ऐसे में मुनाफा भी बढ़ा है। प्रतिदिन दो से ढाई हजार रुपये की बिक्री हो जाती है। इस बिक्री से इन्हें 5 से 6 सौ रुपये का मुनाफा हो जाता है। उन्होंने समूह से लिए गए ऋण को वापस कर दिया है। इनकी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी हो गई है। बच्चों को भी अच्छी शिक्षा दे रही है। वह समूहों की नियमित बैठक कराती हैं। साथ ही विभिन्न जन-जागरूकता अभियानों जैसे खुले में शौच मुक्त अभियान, कोरोना संक्रमण के दौरान वायरस से बचाव एवं टीकाकरण अभियान, मतदाता जागरूकता अभियान, बाल विवाह उन्मूलन एवं दहेज मुक्त विवाह समेत सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु समूह के माध्यम से अभियान चलाती रही हैं। रीता इन दिनों हलसी प्रखंड प्रशासन से मछली पालन के लिए प्राप्त तीन तालाबों के देखरेख हेतु ग्राम संगठन की भी मदद कर रही है। रीता देवी खुद तो खुशहाल हुई ही हैं गाँव की महिलाओं को भी स्वावलंबन की राह दिखाई है।



## Success story of a Bank Mitra

 Chote Bidhata, Manager Communication, Purnea

The success story of Sunita Kumari, a 25-year-old Bank Mitra at the SBI branch in Vasudevpur, Barhara Kothi, Purnea, is a testament to dedication and self-improvement. Sunita's journey is one of remarkable growth, demonstrating how active participation in the Radhika Self Help Group (SHG) since 2017 propelled her into a role as a Bank Mitra. Sunita's journey began when she initially worked as a Help Desk Member for seven months at the BPIU level, aiming to streamline and reinforce the financial ties between Jeevika Self Help Groups and local banks in 2018. During this period, her untapped potential became evident, and she recognized her capacity to excel in this field. Encouraged by her Village Organization, Nirmal, she embarked on her role as a Bank Mitra on October 3, 2018.



To maximize her efficiency in this role, Sunita underwent comprehensive training, which significantly enhanced her knowledge and skill set. She was trained to handle savings account forms, linkage forms, withdrawal forms, deposit forms, and maintain essential records. Although the initial period of her new role posed challenges, she persevered and honed her coordination and communication skills, both at the bank and with Jeevika SHG members. She also mastered the art of meticulous record-keeping at the bank level. Currently, Sunita adeptly manages an impressive portfolio of 950 Saving Accounts and 900 CCL accounts for Jeevika SHGs. Additionally, she caters to the financial needs of 55 Village Organizations associated with this bank branch. Notably, she doesn't just maintain financial records at the branch level; she also proactively informs the communities about their upcoming financial requirements from the bank.

Individual savings accounts are another aspect that Sunita skillfully manages at her branch, with many of these accounts belonging to Jeevika SHG members. She maintains three distinct sets of records to meticulously document the financial transactions pertaining to Jeevika Communities. Sunita's proactive approach goes beyond record-keeping. She uses her insights and analytics to advise the relevant SHGs on depositing or withdrawing funds to maintain a healthy financial status. Furthermore, she provides invaluable assistance to SHG members in completing deposit or withdrawal forms.

During her field visits, Sunita engages with the concerned groups, guiding them in sustaining the financial health of their bank accounts. Her dedication as a Bank Mitra is a continuing journey, driven by a profound commitment to enhancing the financial literacy of the community. Sunita Kumari's success story serves as an inspiring example of how personal growth, dedication, and the right opportunities can transform an individual into a valuable asset for their community. Her ongoing efforts as a Bank Mitra are a testament to the positive impact one person can make when they are motivated to empower their community through financial education and support.



## Insurance provides hope, family gets help

 Sunita Kumari, Manager Communication, Jamui

The value of insurance as a shield for impoverished families becomes unmistakably clear after the passing of a loved one, as their absence underscores the significance of insurance for these vulnerable households. We read about these stories in the newspapers that follow, and among them are accounts of several members of the Jeevika group. These poignant tales narrate how the families of those members who had secured insurance ultimately reap financial benefits. The insurance payout following the demise of the insured individual not only offers a fresh direction but also infuses renewed vitality into the surviving family.



In this narrative, we delve into the life of the late Rita Devi, resident of Dhamna village of Jhajha Block, of Jamui, a devoted member of the Kali Jeevika group. Tragically, she died in 2019 at the tender age of 40, succumbing to unexpected abdominal pain. Didi's untimely demise was attributed to a delay in medical attention and a shortage of funds. Their livelihood was primarily dependent on agriculture. Didi initially held reservations about acquiring insurance. She argued that there was no need to secure insurance if the family would receive financial support after her passing. However, after persistent persuasion, Didi eventually consented to acquiring insurance, a decision unbeknownst to her family. Following her untimely demise, her husband, Manik Rawat, found himself in a state of uncertainty, uncertain about the family's future. It was only through Jeevika's intervention that he learned about the insurance coverage his wife had secured. The insurance payout of two lakh rupees, which he received, played a transformative role in their lives. Manik Rawat utilized the funds to construct a substantial dwelling for the family. In addition to these provisions, Didi's husband supplements their income by leading bhajan-kirtan.

In the Muslim Tola Ketru of Gidhour Block, Nawada District, a heartwarming success story unfolds. Mariam Khatoon was a member of the Afsana Samuh until her untimely demise in 2019 due to a brain tumour at the age of 42. She had been an active participant in the Afsana group since its inception in 2016, leaving behind a legacy continued by her daughter-in-law.

The family's financial support relied on Didi's husband, who crafted hand-rolled cigarettes (Bidi) for a living. With four sons working away from home, their income was inconsistent, leading to occasional hardships, including food shortages. Fortunately, insurance came to their rescue, providing a substantial two lakhs that they used to build a secure home, reshaping their future. Didi had also diligently repaid a prior loan of Rs. 10,000 to the group. This narrative reflects resilience, financial stability, and a family's unwavering commitment to improve their lives.



# बड़की दीदी



बड़की दीदी अपने काम से लौट ही रही थीं कि उनकी नजर पास ही चल रहे स्वयं सहायता समूह की बैठक पर पड़ी। बड़की दीदी बैठक में जाती है और सभी सदस्यों से बात करने लगती हैं।



दीदी, आपलोग आज किस मुद्दे पर चर्चा कर रही हैं?



दीदी, आज हम सब वित्तीय प्रबंधन सम्बंधी मुद्दों पर चर्चा कर रहे हैं।

आपलोग क्या चर्चा कर रहे हैं?



दीदी, हमलोग चर्चा कर रहे हैं कि हमें सही तरीके से ऋण का उपयोग करना चाहिए, जैसे कि व्यापार या शिक्षा के लिए। अनावश्यक उद्योग में न लगाएं।

हमें अच्छे निवेश की ओर ध्यान देना चाहिए। सही समय पर सही जगह में पैसा लगाने से हमें अच्छा लाभ हो सकता है।



अरे यह सारी आवश्यकताएं तो स्वभाविक हैं और अपनी जरूरतों को पूरा कर रहे हैं, लेकिन आपको तो ऋण वापस भी करना है।

तो फिर हमें क्या करना चाहिए दीदी?



हर किसी को एक बजट बनाना चाहिए, ताकि हम अपने खर्चों को नियंत्रित कर सकें। हमें अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए विभिन्न संभावित उद्यमों को शुरू करना चाहिए।







# मन की कलम से



## रचना आमंत्रण



जीविका द्वारा 'चेंजमेकर्स' (द्विभाषीय - त्रैमासिक) पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका में जीविका सम्पादित गतिविधियों / कार्यक्रमों / सफलता की कहानियों के प्रकाशन के साथ ही विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहे जीविका कर्मियों के अनुभवों को भी स्थान दिया जाता है। जीविका कर्मियों से आग्रह है कि वे जीविका से जुड़े अपने अनुभवों / सफलता की कहानियों / कविता / गतिविधियों आदि को 'चेंज मेकर्स' में प्रकाशन के लिए भेजें। रचना हिन्दी और अंग्रेजी या दोनों में से किसी भी भाषा में हो सकती है। रचना के साथ उससे संबंधित तस्वीरें अवश्य संलग्न हों। रचनाकार अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता और संपर्क नंबर का उल्लेख अवश्य करें। रचना को निम्न मेल आईडी पर भेज सकते हैं-

changemakers-brlp@gmail-com

प्रकाशन योग्य रचनाओं को रचनाकार के नाम के साथ पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।

- संपादकीय टीम, चेंजमेकर्स ,

## JEEVIKA's Journey to Financial Inclusion

In the rural fields where life is tough  
JEEVIKA's self-help groups say enough is enough  
They've gathered together, they've formed a bond  
To lift themselves up and become financially strong

With hard work and grit, they've planted their seeds  
And now they're harvesting the fruits of their deeds  
Through their toil and sweat, they've learned to save  
And with each penny, they've paved their way

Their earnings may be small, but their spirits are high  
For they've learned to budget and manage their lives  
No longer are they at the mercy of fate  
For they've learned to control their own financial state

With access to credit and loans at hand  
Their dreams and aspirations have now taken a stand  
They've started businesses, they've built their homes  
Their financial inclusion has given them the freedom to roam

Their future looks bright, for they've learned to invest  
And with every new venture, they've passed another test  
Through JEEVIKA's self-help groups, they've found their way  
And now they're shining brighter with each passing day

Financial inclusion has given them hope  
For a better future and a way to cope  
With the challenges that life may bring  
They're ready to face them with a newfound spring

So let us all raise our hats to these women and men  
For they've shown us the way to financial zen  
Through their hard work and determination  
They've achieved their dreams and found liberation.

 Arpan Mukherjee  
YP-KMC



# • EVENTS

Combating Climate Change through Plantation Drive in Bihar



Secured Runner-Up Position on 15th August for Showcasing JEEVIKA's Education Initiative (CLCDC)



Marketing of JEEVIKA's product in Bihar Saras Mela 2023



Fostering Health and Well Being and Combating Mal-nutrition through Poshan Maah 2023







# JEEVIKA

Rural Development Department, Govt. of Bihar  
Vidyut Bhawan - II, 1<sup>st</sup> & 3<sup>rd</sup> Floor, Bailey Road, Patna- 800 021  
Ph.: +91-612-250 4981 :: Fax : +91-612-250 4960,  
Website : [www.brlp.in](http://www.brlp.in) :: E-mail : [ceo@brlp.in](mailto:ceo@brlp.in)